आशीष और सुख - समृद्धि का जीवन

फ्रैंकलीन के द्वारा तैयार अध्ययन

इस अध्ययन का उद्देश्य हमें यह बताना है कि हम अपने स्वर्गीय पिता और प्रभु यीशु मसीह को प्रसन्न करने वाला जीवन किस प्रकार से जी सकते हैं, जो हमें बहुतायत की आशीषें ग्रहण करने, परमेश्वर की कृपा में जीने और सुख - समृद्धि के जीवन का आनन्द लेने की स्थिति में पहुँचा देता है।

भजन संहिता 3:8 उद्धार यहोवा ही की ओर से होता है; हे यहोवा **तेरी आशीष** (एक वचन) तेरी प्रजा पर हो।।

- सबसे बड़ी आशीष **उद्धार की आशीष** है जो विश्वास करने वाले हर एक जन को मुफ्त में दी गई है।

  रोमियो 4:6-8 जिसे परमेश्वर **बिना कर्मों के** धर्मी ठहराता है, उसे दाऊद भी **धन्य** कहता (एक वचन) है। (7) कि **धन्य** वे हैं, जिन के अधर्म क्षमा हुए, और जिन के पाप ढापे गए। (8) **धन्य** है वह मनुष्य जिसे परमेश्वर पापी न ठहराए।
- यह अध्ययन उद्धार की आशीष के बारे में **नहीं** है।

यह अध्ययन उद्धार की मूल व बड़ी आशीष से परे आशीषों के बारे में है - नीतिवचन 10:6 धर्मी पर बहुत सी **आशीषें** (बहुवचन) होती हैं।

नीतिवचन 10:22 **धन** यहोवा की **आशीष** ही से मिलता है, और वह उसके साथ दुःख नहीं मिलाता।

नीतिवचन 16:7 जब किसी का चालचलन (जो कुछ भी वह करता है या जिस तरह वह रहता है) **यहोवा को भावता** है, तब वह उसके शत्रुओं का भी उस से मेल कराता है।

- तब वह उसके शत्रुओं का भी उस से मेल कराता है। प्रत्येक के साथ व्यवहार में परमेश्वर उसे अनुग्रह देता है। लगभग सभी उसके साथ अच्छा बर्ताव करते हैं।

- "पिन्तेकुस के दिन" के बाद आरम्भिक कलीसिया ... आनन्द और मन की सीधाई से ...[47] और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और **सब लोग उन से प्रसन्न थे** ... प्रेरितों के काम 2:46-47

- परन्तु लोगों को प्रसन्न करना हमारा काम नहीं है। क्या अब मैं **मनुष्यों की कृपा प्राप्त करना चाहता हूं या परमेश्वर की**? या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करने का प्रयास कर रहा हूं? **यदि** मैं अब तक मनुष्यों को प्रसन्न करने का प्रयत्न करता रहता तो **मैं मसीह का दास न होता।** गलातियों 1:10

आशीषित और **सफलता** का जीवन जीने की **कुंजी** यह है कि हर एक बात से बढ़कर :

प्रभु यीशु मसीह को **प्रसन्न करने** की इच्छा रखें :

- हे मरियम .... परमेश्वर का **अनुग्रह** तुझ पर हुआ है। लूका 1:30
- दाऊद पर परमेश्वर ने **अनुग्रह** किया। प्रेरितों के काम 7:46
- और **यीशु बुद्धि** और **डील- डौल** में और **परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह** में बढ़ता गया। लूका 2:52 । हमें भी ऐसा ही करना चाहिए ।
- भला होगा यदि हम भी यीशु मसीह के समान कह सकें :
  मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उस ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा; क्योंकि **मैं सर्वदा वही काम करता हूं, जिस से वह प्रसन्न होता है।** यूहन्ना 8:29
- परमेश्वर प्रत्येक सच्चे विश्वासी **के साथ** है: उस ने आप ही कहा है, कि मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा। (इब्रानियों 13:5)। लेकिन यदि आप ऐसा जीवन जीना चाहते है **जिससे वह प्रसन्न नहीं होता**, तो आप उसकी बहुत सी आशीषों को प्राप्त या उनका आनन्द नहीं उठा सकते।
- **जो "परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला" जीवन जीते हैं, उनके लिए उसकी उपस्थिति उसकी कृपा और आशीषों के द्वारा जानी जाती है।**

परमेश्वर से प्रेम करने और उसे खोजने से वह बहुत प्रसन्न होता है

- भजन संहिता 34:10 **यहोवा के खोजियों** को **किसी भली वस्तु** की घटी न होगी।।
- मत्ती 6:33 इसलिये पहिले तुम **उसके राज्य** और **धार्मिकता** की खोज करो तो **ये सब वस्तुएं तुम्हें मिल जाएंगी।**
  - सन्दर्भ में "ये सब वस्तुएं" का अर्थ भोजन, वस्त्र और आवास है।
  - **पहिले उसके राज्य की खोज करने** के लिए यीशु को आपका राजा होना चाहिए। और इसके लिए उसकी सेवा करने और उसकी आज्ञा मानने की आवश्यकता है।
  - **उसकी धार्मिकता की खोज करने** का अर्थ यह जानना है कि आपके पास न तो अपनी धार्मिकता है और न ही कभी होगी परन्तु आप बिलकुल गिरी हुई अवस्था में हैं और आपको परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता है।
    रोमियों 3:22-24 **परमेश्वर की वह धार्मिकता**, जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करनेवालों के लिये है [24] परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते(धर्मी बनाए जाते) हैं।

- नीतिवचन 8:17-21 **जो मुझ से प्रेम रखते हैं**, उन से मैं भी प्रेम रखती हूं, और जो **मुझ को यत्न से** तड़के उठकर खोजते हैं, वे मुझे पाते हैं। (18) **धन** और **प्रतिष्ठा** मेरे पास है, वरन **स्थायी धन** और **धर्मिकता** भी हैं। (19) मेरा फल चोखे सोने से, वरन कुन्दन से भी उत्तम है, और मेरी उपज उत्तम चान्दी से अच्छी है। (20) **मैं धार्मिकता** के मार्ग पर, और **न्याय** की राहों के बीच में चलती हूं, (21) जिस से **मैं अपने प्रेमियों को धन प्रदान करूं**, और **उनके भण्डारों को भर दूं।**
    - परमेश्वर को यत्न से खोजने के लिए आपको **उस मार्ग पर चलना होगा जिस पर वह चला था।** धन, प्रतिष्ठा और संपत्ति उसके पास हैं। उसे खोजें ! उसके साथ चलें ! उसके धार्मिकता के मार्ग में, उसके न्याय की राहों पर।

इफिसियों 5:8 पहिले तो तुम अन्धकार थे, परन्तु अब प्रभु में **ज्योति हो**, अतः **ज्योति की सन्तान के सदृश चलो** ।

- विश्वासी होने के नाते आपको **संसार की मार्गों पर नहीं चलना** है। आप "ज्योति की सन्तान" हैं और आपको ऐसा अपना चाल-चलन या जीवन जीना है जिससे आप इस संसार और इसकी राहों के अन्धकार में ज्योति लाएं। **इन बातों से प्रभु प्रसन्न होते हैं।**

(9) क्योंकि ज्योति का फल सब प्रकार की **भलाई**, **धार्मिकता** और **सत्य** है-(10) **परखो कि प्रभु किन बातों से प्रसन्न होता है।**

- अगर आप ज्योति में चल रहे हैं तो जो भी आप करते हैं वह "भला" होगा, वह "सही" और "सच्चा" होगा।
- आप उस मार्ग पर चलेंगे जो "परमेश्वर को **प्रसन्न करने वाला**" है और अपने आप को परमेश्वर की **कृपा** और **आशीषों** का पात्र बना लेंगे।

(11) अन्धकार के निष्फल कामों में सहभागी न हो वरन् इन कामों को प्रकट करो।

- उनके कामों को **करके नहीं** परन्तु जो बातें प्रभु यीशु मसीह को प्रसन्न करने वाली हैं, **वही करके** उनको प्रकट करें। और आप अच्छे गवाह होंगे।

(12) क्योंकि जो काम गुप्त में उनके द्वारा किए जाते हैं। उनकी चर्चा भी लज्जा की बात है।(13) पर जितने कार्य प्रकट किए जाते हैं वे सब ज्योति से प्रकट होते हैं, क्योंकि जो सब कुछ को प्रकट करता है वह ज्योति है।

- इस सम्बन्ध में मैं आपको इस पद को **हमेशा** याद रखने की सलाह दूँगा:

    गिनती 32:23 .... और जान लो कि तुम को तुम्हारा ही पाप लगेगा।

(14) इस कारण वह कहता है, "हे सोने वाले, जाग और मृतकों में से जी उठ, तो मसीह की ज्योति तुझ पर चमकेगी।"

- "जाग" जीवन की मृत चालों में से जी उठ, और परमेश्वर की **कृपा और आशीष** "तुझ पर चमकेगी"।

नीतिवचन 4:18 परन्तु धर्मियों की चाल उस चमकती हुई ज्योति के समान है, जिसका **प्रकाश** दोपहर तक **अधिक अधिक बढ़ता रहता** है।
इसके विपरीत - पापी की चाल रात्री के अँधेरे के समान है जो और अधिक अंधकारमय होता चला जाता है।

(15) इसलिए **सावधान रहो कि तुम कैसी चाल चलते हो,** निर्बुद्धि मनुष्यों के सदृश नहीं वरन् **बुद्धिमानों** के सदृश चलो। (16) समय का पूरा पूरा उपयोग करो, क्योंकि **दिन बुरे हैं**। (17) **इस कारण निर्बुद्धि न हो**, परन्तु **यह जान लो कि प्रभु की इच्छा क्या है**।

- "परमेश्वर की इच्छा" गुप्त नहीं है। यह बाइबल में, प्रत्येक भाषा में स्पष्ट लिखी हुई है, ताकि **जो कोई "परमेश्वर की इच्छा"** जानना चाहता हो, वह सरलता से जान सके।
- मूसा की बड़ी तीव्र इच्छा थी कि वह "प्रभु की इच्छा को जाने"। अब यदि मुझ पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि हो, तो **मुझे अपनी गति समझा** दे, जिस से **मैं तुझे जान पाऊं**।

बाइबल पढ़ने पर आप न केवल प्रभु की इच्छा - उसके मार्गों को जानेंगे और **उसके अनुग्रह** को पाएंगे परन्तु वह आपको **अपने आप का, और अपनी महिमा का प्रगतिशील प्रकाशन देगा**।

मूसा ने कहा मुझे अपना तेज दिखा दे 19 उस ने कहा, मैं तेरे सम्मुख होकर चलते हुए तुझे अपनी सारी **भलाई** दिखाऊंगा, और **तेरे सम्मुख यहोवा नाम का प्रचार करूंगा,**

उसकी महिमा, उसके वचन और उसकी सृष्टि में प्रकट होती है।

गिनती 14:20-21 यहोवा ने कहा, ... परन्तु मेरे जीवन की शपथ सचमुच सारी पृथ्वी यहोवा की महिमा से परिपूर्ण हो जाएगी

एलिजाबेथ बैरेट की कविता:

सारे संसार में है उसकी महिमा
जली हर आम झाड़ी परमेश्वर से
लेकिन सिर्फ वही आंखें जो उसे देखना चाहती हैं अपने जूते उतारे
बचे हुए बैठें पास और खाएं जामुन

उसके वचन को जानने और उनका पालन करने से परमेश्वर प्रसन्न होता है

- भजन संहिता 1:1-3 क्या ही **धन्य** है वह पुरूष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता; और न ठट्ठा करनेवालों की मण्डली में बैठता है! (2) परन्तु वह तो **यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता;** और उसकी व्यवस्था पर रात दिन **ध्यान करता** रहता है। (3) वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती जल धाराओं के किनारे **लगाया गया** है। और अपनी ऋतु में **फलता** है, और जिसके पत्ते कभी **मुरझाते नहीं**। इसलिये **जो कुछ वह पुरूष करे वह सफल होता है।।**

- नीतिवचन 3:1-4 हे मेरे पुत्र, **मेरी शिक्षा को न भूलना;** अपने हृदय में **मेरी आज्ञाओं को रखे रहना;** (2) क्योंकि ऐसा करने से **तेरी आयु बढ़ेगी**, और **तू अधिक कुशल से रहेगा**। (3) **कृपा और सच्चाई तुझ से अलग न होने पाएं**; वरन उनको **अपने गले का हार बनाना**, और अपनी हृदयरूपी पटिया पर लिखना। (4) और तू परमेश्वर और मनुष्य दोनों का **अनुग्रह** पाएगा, तू अति **बुद्धिमान** होगा।।

- नीतिवचन 4:20-23 हे मेरे पुत्र **मेरे वचन ध्यान धरके सुन**, और अपना कान **मेरी बातों** (दुनिया की नहीं) पर लगा। (21) इनको **अपनी आंखों की ओट न होने दे**; वरन **अपने मन में धारण कर**।(22) क्योंकि जिनकों वे प्राप्त होती हैं, वे **उनके जीवित रहने** का, और उ**नके सारे शरीर के चंगे रहने** का कारण होती हैं। (23) सब से अधिक **अपने मन की रक्षा कर**; क्योंकि **जीवन का मूल स्रोत** वही है।

- नीतिवचन 8:32 - 9:1 इसलिये अब हे मेरे पुत्रों, मेरी सुनो; क्या ही **धन्य हैं वे जो मेरे मार्ग को पकड़े रहते हैं**।(33) शिक्षा को सुनो, और बुद्धिमान हो जाओ, **उसके विषय में अनसुनी न करो।** (34) क्या ही **धन्य है वह मनुष्य जो मेरी सुनता**, वरन मेरी डेवढ़ी पर प्रति दिन खड़ा रहता, और मेरे द्वारों के खंभों के पास **दृष्टि लगाए रहता** है।(35) क्योंकि **जो मुझे पाता है, वह जीवन को पाता है**, और यहोवा उस से **प्रसन्न** होता है।(36) परन्तु **जो मेरा अपराध करता है, वह अपने ही पर उपद्रव करता है**; जितने मुझ से बैर रखते वे मृत्यु से प्रीति रखते हैं।।

- यूहन्ना 15:7-11 **यदि** तुम **मुझ में बने रहो**, और **मेरी बातें तुम में बनी रहें** तो **जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिये हो जाएगा**।(9) जैसा पिता ने मुझ से प्रेम रखा, **मेरे प्रेम में बने रहो**।(10) यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो **मेरे प्रेम में बने रहोगे**: जैसा कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं।(11) मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि **मेरा आनन्द तुम में बना रहे**, और **तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए**।

उसके मार्गों को जानने और उन पर चलने से आशीषें और आनन्द प्राप्त होता है।

विश्वासयोग्यता परमेश्वर को बहुत प्रसन्न करती है

- नीतिवचन 28:20 **विश्वासयोग्य** मनुष्य **आशीषों की बहुतायत** पाएगा
- लूका 12:42-44 **विश्वासयोग्य** और समझदार **भण्डारी** कौन है, जिस का स्वामी उसे नौकर चाकरों पर अधिकारी नियुक्त करे कि उन्हें ठीक समय पर भोजन सामग्री दे? (43) **धन्य है वह दास**, जिसे उसका स्वामी आकर ऐसा ही करते पाए। (44) मैं तुम से सच कहता हूं; **वह उसे अपनी सब संपत्ति पर अधिकारी नियुक्त करेगा।**
    - o इस भाग के द्वारा, उस **काम के प्रति** जो आपको आपके अधिकारी और परमेश्वर ने दिया है **विश्वासयोग्य** बने रहने से परमेश्वर प्रसन्न रहता है। यह अगला विषय है।

- लूका 16:10-12 जो थोड़े से में **विश्वासयोग्य** है, वह **बहुत में भी विश्वासयोग्य** है: और जो थोड़े से में अधर्मी है, वह बहुत में भी अधर्मी है। (11) इसलिये जब तुम अधर्म के धन में **विश्वासयोग्य** न ठहरे, तो सच्चा धन तुम्हें कौन सौंपेगा? (12) और यदि तुम पराये धन में **विश्वासयोग्य** न ठहरे, तो जो तुम्हारा है, उसे तुम्हें कौन देगा?

    - o पवित्र आत्मा से कहें कि वह आपको और अधिक विश्वासयोग्य बनने का मार्ग दिखाए ... परमेश्वर के प्रति, दूसरों के प्रति, अपने प्रति।

यत्न और कठिन परिश्रम आशीषें लाती है

- उत्पत्ति 3:17-19 और आदम से उस ने कहा, तू ने ... वृक्ष के फल ... को तू ने खाया है, इसलिये भूमि तेरे कारण शापित है: तू उसकी ऊपज जीवन भर **कठिन परिश्रम के साथ** खाया करेगा : (18) और वह तेरे लिये कांटे और ऊंटकटारे उगाएगी, और तू खेत की उपज खाएगा ; (19) **और अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा,**

    - o "पहले मनुष्य" की अनाज्ञाकारिता का परिणाम कार्य है। यदि कोई व्यक्ति **काम-काज करना न चाहेगा** तो वह **हानि उठाएगा** और **निर्धनता** में जीवन बिताएगा।

- नीतिवचन 22:29 क्या तू किसी व्यक्ति को देखता है **जो अपने कार्य में निपुण है**? वह तो राजाओं के सामने खड़ा होगा।

- नीतिवचन 6:6-11 हे आलसी, चींटी के पास जा; **उनके काम पर ध्यान दे**, और बुद्धिमान हो। (7) उनके न तो कोई न्यायी होता है, न प्रधान, और न प्रभुता करनेवाला, (8) तौभी वे **अपना आहार** धूपकाल में संचय करती हैं, और कटनी के समय अपनी भोजनवस्तु बटोरती हैं। (9) हे आलसी, तू कब तक सोता रहेगा? तेरी नींद कब टूटेगी? (10) कुछ और सो लेना, थोड़ी

सी नींद, एक और झपकी, थोड़ा और हाथ पर हाथ रख के लेटे रहना, (11) तब **तेरी दरिद्रता** राह के लुटेरे के समान और **तेरी घटी** शस्त्रधारी के समान आ पड़ेगी।।

एक उदार और देने वाला मन परमेश्वर को प्रसन्न करता है

- नीतिवचन 11:25 **उदार व्यक्ति संपन्न हो जाता है**; जो दूसरों की खेती सींचता है, उसकी भी सींची जाएगी।
- नीतिवचन 22:9 **उदार हृदय वाला आशीषित होगा**, क्योंकि वह कंगाल को अपने भोजन में से देता है।
- मलाकी 3:10-11 **सारे दशमांश** भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजनवस्तु रहे; और सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि **ऐसा करके** मुझे परखो कि **मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिये खोलकर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष की वर्षा करता हूं** कि नहीं। (11) तेरी फसल बहुतायत से होगी, क्योंकि मैं उन्हें कीड़ों से और बीमारियों से बचाऊंगा। और तुम्हारी दाखलताओं के फल कच्चे न गिरेंगे, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।।
    - o जब तुम्हें तुम्हारा वेतन, या भत्ता मिले:

      सबसे पहले : प्रभु के लिए **10% या उससे अधिक अलग कर दें।**

      दूसरा : अपनी **बचत के लिए 10%** अलग कर लें

      तीसरा : **10%** अपने भविष्य के लिए **जमा कर लें**

      चौथा : **70%** की अपनी आय **पर रहें**

      प्रयास करें । अपने लिए परमेश्वर को यह सिद्ध करने दें

दूसरों का आदर करने से परमेश्वर प्रसन्न होता है

- रोमियों 13:7 **जिसे जो देना है उसे दो**; जिसे कर चुकाना है, उसका कर चुकाओ; जिसे चुंगी देना है, उसे चुंगी दो; जिस से डरना चाहिए, उस से डरो; **जिस का आदर करना चाहिए उसका आदर करो।।**
- नीतिवचन 3:9-10 अपनी संपत्ति के द्वारा और अपनी भूमि की पहिली उपज दे देकर **यहोवा की प्रतिष्ठा करना;** (10) इस प्रकार **तेरे भण्डार बहुतायत से भरे रहेंगे**, और तेरे रसकुण्डों से **नया दाखरस उमण्डता रहेगा।।**
- इफिसियों 6:2-3 **अपनी माता और पिता का आदर कर** (यह पहिली आज्ञा है, जिस के साथ **प्रतिज्ञा** भी है)। (3) **कि तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे।**
- 1 पतरस 3:7 वैसे ही **हे पतियों**, तुम भी बुद्धिमानी से **पत्नियों** के साथ जीवन निर्वाह करो और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर **उसका आदर करो**, यह समझकर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं, **जिस से तुम्हारी प्रार्थनाएं रूक न जाएं।।**

पाप से घृणा करना और धार्मिकता का जीवन जीना, आशीषों को लाता है :

- इस अजनबी सम्बन्धी के जीवन पर विचार करें : याबेस ने इस्राएल के परमेश्वर को यह कहकर पुकारा, कि **भला होता, कि तू मुझे सचमुच आशीष देता**, और **मेरी सीमा को बढ़ाता**, और तेरा **हाथ** मेरे साथ रहता, और तू मुझे **हानि** से ऐसा बचाता कि मुझे उस से पीड़ा न होती ! और **जो कुछ उस ने मांगा, वह परमेश्वर ने उसे दिया।** 1 इतिहास 4:10

  क्यों? पद 9 : याबेस अपने भइयों से **अधिक प्रतिष्ठित** हुआ, ...

  याकूब 5:16 **धर्मी जन** की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है।

- नीतिवचन 3:7-8 अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न होना; **यहोवा का भय मानना**, और **बुराई से अलग रहना**। (8) **ऐसा करने से तेरा शरीर भला चंगा**, और तेरी हड्डियां **पुष्ट रहेंगी**।
- नीतिवचन 13:21 विपत्ति पापियों का पीछा करती है, परन्तु **धर्मियों** को **प्रतिफल** में **सुख - समृद्धि** मिलती है।

विपत्ति या सुख - समृद्धि ----- चुनाव आपका है

यदि आपको चाहिए तो एक आशीषित और सुख - समृद्धि का जीवन उपलब्ध है।
यह आपका निर्णय है।
यह निर्भर करता है कि आप किसको **सबसे अधिक महत्व** देते और खोजते हैं ।

यीशु ने अपने शिष्यों से पूछा: तुम किस की खोज में हो? (यूहन्ना 1:38)

वह इसी प्रश्न को हम में से हर एक से पूछ रहा है।

हमें गंभीरतापूर्वक अपने आप से यह प्रश्न पूछना चाहिए: क्या **अब मैं मनुष्यों की कृपा प्राप्त करना चाहता हूं या परमेश्वर की**? या **मैं मनुष्यों को प्रसन्न करने का प्रयास कर रहा हूं**? यदि मैं अब तक मनुष्यों को प्रसन्न करने का प्रयत्न करता रहता तो मैं मसीह का दास न होता। गलातियों 1:10

यह उन सब लोगों के लिए **कड़ी चेतावनी** है जो इस **संसार की वस्तुओं** के **पीछे चलने वाले लोगों** को **प्रसन्न करने** और उनके द्वारा अपनाए जाने के लिए प्रेरित होते हैं :

कोई तुम्हें व्यर्थ बातों से **धोखा न दे,** क्योंकि इन ही के कारण **आज्ञा न मानने वालो** पर परमेश्वर का **प्रकोप** पड़ता है। (7) इसलिए **तुम ऐसे लोगों के सहभागी न बनो।** (इफिसियों 5:6-17).

- सन्देश स्पष्ट है: "आज्ञा न मानने वालो" पर परमेश्वर का क्रोध है। और इस प्रकार का जीवन जीने वाला विश्वासी परमेश्वर को **बिलकुल प्रसन्न नहीं करता**। और इस प्रकार का विश्वासी प्रभु के **अनुशासन** और **बहुत सी कठनाइयों** और **समस्याओं** का सामना करेंगे।

    - नीतिवचन 3:12 क्योंकि यहोवा जिस से प्रेम करता है उसे डांटता भी है, जैसे कि पिता उस पुत्र को जिसे वह अधिक चाहता है।

- गलातियों 6:7-10 धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि **मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा।** (8) क्योंकि जो अपने शरीर को **प्रसन्न करने के लिये** बोता है, वह शरीर के द्वारा **विनाश की कटनी काटेगा**; और जो आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा। (9) हम भलाई करने में निरुत्साहित न हों, क्योंकि यदि हम शिथिल न पड़ें तो **उचित समय पर कटनी काटेंगे**।

- इसलिए हमें यह **कड़ी चेतावनी** दी गई है:

1 यूहन्ना 2:15-17 **संसार से प्रेम न करो, और न उन वस्तुओं से जो संसार में हैं।** यदि कोई संसार से प्रेम करता है तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है। (16) क्योंकि वह सब जो संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, आंखों की लालसा और जीवन का अहंकार, पिता की ओर से नहीं परन्तु संसार की ओर से है। (17) **संसार तथा उसकी लालसाएं भी मिटती जा रही हैं,** परन्तु **वह जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है** सर्वदा बना रहेगा।

अच्छा होगा यदि प्रेरित पौलुस की सी अभिलाषा हम में भी हो :

2 कुरिन्थियों 5:9-11 इस कारण **हमारी अभिलाषा** यह है, कि चाहे साथ रहें, चाहे अलग रहें पर **हम उसे भाते रहें।** (10) क्योंकि अवश्य है, कि **हम सब** का हाल **मसीह के न्याय आसन** के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने अपने भले बुरे **कामों का बदला** जो उस ने **देह के द्वारा किए** हों पाए।।

- इस प्रकार से मिलना हम सब के लिए निश्चित है

अच्छे गवाह बनना हमारे प्रभु यीशु मसीह को प्रसन्न करता है

- राजा दाऊद ने इस बात को समझा और उसने आपार आशीषें पाई : भजन संहिता 67:1-2,7 परमेश्वर **हम पर अनुग्रह करे** और हम को **आशीष दे**; वह अपने मुख का प्रकाश हम पर चमकाए (2) जिस से **तेरा मार्ग** पृथ्वी पर, और तेरा किया हुआ **उद्धार** सारी जातियों में **जाना जाए।**(7) **परमेश्वर हम को आशीष देगा; और पृथ्वी के दूर दूर देशों के सब लोग उसका भय मानेंगे।।**

- मसीही होने के नाते हमें इस पृथ्वी पर एक महत्वपूर्ण काम पूरा करने के लिए दिया गया है। यीशु ने कहा: जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूं (यूहन्ना 20:21) ताकि उस काम को पूरा कर सकें जिसका आरम्भ उसने किया था। क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उन का उद्धार करने आया है।। (लूका 19:10)

वह इस बात से प्रसन्न होता है - कि हम धार्मिकता का जीवन जीते हुए दूसरों के लिए एक अच्छा उदाहरण और साक्षी हों तथा उन लोगों से वैसा प्रेम करें जैसा वह करता है।

उसके राजदूत बनकर, उसका **कार्य पूरा करने** से **उसको प्रसन्नता** होती है

पहले परमेश्वर ने अब्राहम और उसके लोगों को चुना, कि समस्त जातियों में उसके गवाह हों, और सुसमाचार का अदभुत सन्देश सभी लोगों तक पहुंचाएं (गलातियों 3:8)।

अब्राम कसदियों के उर नामक स्थान पर **अन्य जाति और मूर्तिपूजकों की संस्कृति** में रहता था (उत्पति 11:28)। उस संस्कृति **में से** उसे परमेश्वर का साक्षी होने के लिए **बुलाया** गया कि वह परमेश्वर को **प्रसन्न करने वाले मार्गों** को सीखे।

परमेश्वर ने प्रत्येक विश्वासी को उस संस्कृति से बाहर बुलाया है जहाँ वे रहते थे (हैं)।

- उत्पति 12:1-4 यहोवा ने अब्राम से कहा, "अपने देश, और अपनी जन्मभूमि, और अपने पिता के घर को **छोड़कर** उस देश में **चला जा**, जो मैं तुझे दिखाऊंगा। (2) मैं तुझे एक बड़ी जाति बनाऊंगा, और **मैं तुझे आशिष दूंगा** और **तेरा नाम महान् करूंगा** (दूसरे लोगों के साथ आप पर कृपा) ; **इसलिए तू आशिष का कारण होगा**;(3) जो **तुझे आशीर्वाद देंगे, मैं उन्हे आशिष दूंगा** (इस्राएल को आशीष दो और आपको आशीष मिलेंगी), तथा जो तुझे शाप दे, मैं उसे शाप दूंगा, और **पृथ्वी के सब घराने तुझ में आशिष पाएंगे**।" (यह उसका कार्य था: आशीष देने के लिए आशीषित। और यीशु मसीह अब्राहम के वंशजों में से आया, जिससे पृथ्वी के सब घरानों के लिए बहुत आशीष हो) (4) यहोवा के इस वचन के अनुसार अब्राम चल पड़ा और लूत भी उसके साथ गया। अब्राह तो पचहत्तर वर्ष का था जब उसने हारान से **कूच किया।**

अब्राम ने **आज्ञा मानी** और **अन्य जाति संस्कृति छोड़ दी**, और **आशीषों** का **आरम्भ हुआ**:

- उत्पति 13:2 अब्राम अपने पशुओं, सोने और चांदी के कारण बड़ा धनी था।

अब्राहम ने परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन तब भी किया जबकि वह उन्हें समझता भी नहीं था और उसे **बहुत आशीषें** दी गईं। जितना उसने आज्ञा पालन किया - उतना ही उसने आशीषें पाईं।

उत्पति 22:12 उसने कहा, "उस लड़के की ओर हाथ न बढ़ा, और न ही उसे कोई हानि पहुंचा। **मैं अब जान गया हूं कि तू परमेश्वर का भय मानता है,** क्योंकि तू ने मेरे लिए अपने पुत्र अर्थात् अपने एकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा।(16) "यहोवा यह कहता है :क्योंकि तू ने यह काम किया है कि अपने पुत्र वरन् अपने एकलौते पुत्र को भी **नहीं रख छोड़ा, इस कारण मैं निश्चय तुझे आशीष दूंगा।**

मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ - उससे कुछ भी न रोक रखें

इसका अर्थ सबसे पहले आप स्वयं हैं ।

आप दाम देकर मोल लिये गए हो (1 कुरिन्थियों 6:20) **तुम्हारा छुटकारा ... बहुमूल्य लहू से हुआ है** (1 पतरस 1:18)

"अब्राहम की सन्तान" (रोमियों 4:11-12) होने के नाते, वह "आपको **आशीष देगा** ताकि आप आशिष के कारण हों" यह तब होगा जब आप उसकी बुलाहट को सुनेंगे और **संसार की रीति में से बाहर निकल आएँगे।** जिस भूमि पर वह आपको ले जाएगा वो परमेश्वर का राज्य है। जब हम राज्य के मार्गों के अनुसार चलते है, तो वहाँ आशीषें बहुतायत से बहती हैं।

हालाँकि, जैसे जैसे समय बीतता गया, अब्राहम के वंशज परमेश्वर के लिए और उसकी दृष्टि में भावती चाल नहीं चले। और परमेश्वर के लोगों ने अपने आपको **गरीबी** और मिस्र की **अन्य जाति संस्कृति के बन्धनों में जकड़ा हुआ, दासत्व** में पाया।

- आप अपने साथ ऐसा न होने दें

और परमेश्वर ने उन्हें बुलाया और उन्हें उस संस्कृति से बाहर निकाल कर ले गया ताकि उन्हें अपने मार्ग **सिखाए** जिससे वे **आशीष पाएं** और सब जातियों में उसके गवाह ठहरें। तथापि, उन्होंने विद्रोह किया और वापस इस संसार की परिचित संस्कृति में लौट जाना चाहा।

1 कुरिन्थियों 10: 1-11 परन्तु फिर भी उनमें से अधिकांश से **परमेश्वर प्रसन्न नहीं हुआ** वे जंगल में मर कर ढेर हो गए।(6) ये बातें हमारे लिए **उदाहरण ठहरीं** कि हम भी **बुरी बातों की लालसा न करें,** जैसे कि उन्होंने की थी।(7) और **मूर्तिपूजक** न बनो जैसे की उनमें से कुछ थे, जैसा लिखा है, "लोग **खाने पीने** को बैठे, और **खेलने कूदने** को उठे।" (8) और न हम व्यभिचार करें, जैसे कि उनमें से बहुतों ने किया- और एक दिन में तेईस हज़ार मर गए।(9) और न हम **प्रभु को परखें,** जैसे कि उनमें से बहुतों ने किया तथा सर्पों द्वारा नाश हुए। (10) न तुम **कुड़कुड़ाओं**, जैसे कि उनमें से बहुतों ने किया-और नाश करने वाले के द्वारा नाश किए गए। (11) **ये बातें उन पर उदाहरणस्वरूप हुईं**, और ये **हमारी चेतावनी के लिए**

लिखी गईं जिन पर इस युग का अन्त आ पहुंचा है।(12) अतः **जो यह समझता है कि मैं स्थिर हूं, वह सावधान रहे** कि कहीं गिर न पड़े। (13) तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े जो मनुष्य के सहने से बाहर है। परमेश्वर तो सच्चा है जो तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में **पड़ने नहीं देगा**, परन्तु परीक्षा के साथ साथ **बचने का उपाय** भी करेगा कि **तुम उसे सह सको।**

- यह अनुच्छेद और पुराने के साथ नया नियम हमारे लिए लिखे गए थे, ताकि हम अपनी नहीं बल्कि **उनकी गलतियों,** उनके पापों **से सीख ले सकें**।

- यदि आप परमेश्वर की कृपा और अनुग्रह में "परमेश्वर के समक्ष उसको प्रसन्न करने वाली चाल चलने" की इच्छा रखते हैं, तो यह आवश्यक है कि आप पुराने नियम को भी पढ़ें और समझें। मैं तुम्हें बहुत अत्यन्त प्रोत्साहित करना चाहूँगा कि आप ऐसा करें। मैं आपको एक साल या उससे भी कम में पूरी बाइबल 'उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य' पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करूँगा।

- इस्राएल देश 400 सालों तक मिस्र की गुलामी में था। वे सब **मिस्र की संस्कृति** में डूब चुके थे और यही वो जानते थे। जब प्रभु उन्हें बाहर निकाल कर लाया तब उनके मनों को **परमेश्वर के राज्य की संस्कृति के लिए** और प्रभु के **मार्गों में नया करने** (रोमियों 12:1) की बड़ी आवश्यकता थी। उस मार्ग के लिए जिससे वह प्रसन्न होता है और उसकी कृपा और आशीषें प्राप्त होती हैं।

- यह परमेश्वर के लिए इतना आवश्यक था कि उसने स्वयं पत्थर की पट्टियों पर दस सबसे बड़ी आज्ञाओं को उनके लिए लिखा ताकि वे उसका पालन करें।

- यह चित्र आज हमारे लिए भी सच है। **हम भी** इस **सांसारिक प्रणाली की संस्कृति** में पलते बढ़ते और रहते हैं तथा हमारा मन इस संसार के मार्गों के अनुसार ढल चुका है जिससे हम इन बातों को समान्य और सही मानकर ग्रहण कर लेते हैं । केवल एक ही समस्या है, **इस संसार की अनेक संस्कृतियाँ** "इस संसार के राजकुमार" अर्थात शैतान के द्वारा है तथा उसके आधीन है।

    - o 1 यूहन्ना 5:19 हम जानते हैं कि हम परमेश्वर से हैं, और सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है।

    - o इफिसियों 2:1-4 तुम तो उन अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे,(2) जिनमें तुम पहिले इस **संसार की रीति** और आकाश में शासन करने वाले अधिकारी अर्थात् उस आत्मा के अनुसार **चलते थे** जो अब भी आज्ञा न मानने वालों में क्रियाशील है। (3) उन्हीं में **हम सब** भी पहिले अपने शरीर की लालसाओं में **दिन बिताते** थे, शरीरिक तथा मानसिक इच्छाओं को पूरा करते थे, और अन्य लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे।

- पतरस को यीशु के वचन प्रकट करते हैं कि इस संसार के अधिकतर सोच, शैतान से बहुत प्रभावित।

  मत्ती 16:23 तब उसने मुड़कर पतरस से कहा, "हे शैतान, मेरे साम्हने से दूर हो: तू मेरे लिये ठोकर का कारण है; क्योंकि **तू परमेश्वर की बातें नहीं, पर मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है।"**

  पतरस कह रहा था - दूसरों के लिए अपना जीवन न दो और दूसरों के लिए दुःख न उठाओ। उसकी सोच स्वार्थ से भरी थी - अपने को बचाओ न कि दूसरों को ।

- जब तक हम "**इस संसार के मार्गों**" के द्वारा जीते हैं और उन्हें ग्रहण करते हैं, हम **शैतान को खुले द्वार देते हैं** और उसका उद्देश्य, जिस भी तरह वह चाहे "चोरी, हत्या, और नाश कर" (यूहन्ना 10:10) सकता है। और हम अपने जीवन में परमेश्वर की **सम्पूर्ण आशीषों** से **वंचित** रह जाते हैं।
  - जैसे ट्रोजनों ने धोखा खा कर, "ट्रोजन घोड़े" को जो यूनानी योद्धाओं से भरा था, अपने शहर में धकेल दिया था, ऐसे ही बहुत से विश्वासी करते हैं। इस संसार की प्रणाली के दुष्ट आत्माओं को, योद्धाओं को अपने बीच में ले आते हैं। इस संसार के मार्गों को अपनाने के द्वारा, बिलकुल अपने घरों में ले आते हैं।

- जिस प्रकार शैतान ने यीशु की परीक्षा ली उसी प्रकार वह आपकी **परीक्षा भी लेगा**। परन्तु, जब तक हमारा मन "संसार के मार्गों " के अनुसार चलता है, शैतान को **हमारी परीक्षा लेने की कोई ज़रूरत नहीं,** क्योंकि हम अन्धों के समान बहुतों के साथ साथ उसके पीछे उस आसान और "चौड़े" पथ पर चल रहे हैं जहां पीड़ा, हृदय की वेदना, परेशानियां, गरीबी और हर प्रकार की समस्याएं हैं।

- यीशु ने कहा: "सकरे फाटक से प्रवेश करो; क्योंकि विशाल है **वह फाटक और चौड़ा है वह मार्ग जो विनाश की ओर ले जाता है,** और बहुत से हैं जो उस से प्रवेश करते हैं।(14) परन्तु छोटा है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन की ओर ले जाता है और **थोड़े ही हैं जो उसे पाते हैं।** (मत्ती 7:13-14)

- स्मरण रखें, का यीशु ने **अपनी प्रत्येक परीक्षा** में शैतान की हर एक **तार्किक** प्रस्तुति का उत्तर वचन के द्वारा दिया जो इस **सांसारिक साधारण सोच** के विपरीत था। हमें इस योग्यता की आवश्यकता है ताकि हमें परीक्षा के समय में अगुवाई मिल सके।

- यीशु "स्वर्ग के राज्य के मार्गों" के अनुसार जीया और इसी प्रकार यदि हम "परमेश्वर को प्रसन्न" करना चाहते हैं और आशीषित तथा सुख-समृद्धि का जीवन चाहते हैं तो **हमें भी ऐसा ही करना चाहिए।**

- यदि हम परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते हैं, तो **हमारे लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम अपने मन को स्वर्ग के राज्य की संस्कृति के अनुसार नया करें।**

- 2 कुरिन्थियों 6:13 तुम्हें **बच्चे** समझकर अब मैं कहता हूं (14) अविश्वासियों के साथ असमान जुए में **न** जुतो, क्योंकि धार्मिकता का अधर्म से क्या मेल? या ज्योति की अन्धकार से **क्या संगति**?(15) और मसीह का बलियाल से क्या **लगाव**? जब विश्वासी इस संसार के मार्गों में) (हीं होगीजीएगा तो बिलकुल शान्ति न या विश्वासी का अविश्वासी से क्या सम्बन्ध? (16) या मूर्तियों से परमेश्वर के मन्दिर का क्या **समझौता**? क्योंकि **हम तो जीवित परमेश्वर के मन्दिर हैं** (और मन्दिर के बनने का उद्देश्य आराधना और परमेश्वर की साक्षी देना होता है) जैसा परमेश्वर ने कहा: "मैं उन में बसूंगा और उन में चला फिरा करूंगा; और मैं उन का परमेश्वर हूंगा, और वे मेरे लोग होंगे। (निर्गमन (26:12 लैव्य 29:45) (17) इसलिये प्रभु कहता है, कि उन के बीच में से **निकलो** और **अलग रहो**; और अशुद्ध वस्तु को **मत छूओ**, तो **मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा।** (यशायाह 52:10-11) (18) और मैं तुम्हारा पिता होऊंगा और तुम मेरे **बेटे** और **बेटियां** होगे।। सर्वशक्तिमान प्रभु यह कहता है "
    - हमारा व्यवहार इस संसार के बेटे और बेटियों के **समान नहीं** परन्तु अपने स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के बेटे और बेटियों के **समान होना चाहिए**।

- 2 कुरिन्थियों 7:1 अतः हे प्रियो, जब कि हमें ये **प्रतिज्ञाएं प्राप्त हैं** तो आओ, परमेश्वर के भय में **पवित्रता को सिद्ध करते हुए** (नैतिक शुद्धता), हम देह और आत्मा की **सब अशुद्धता** से अपने आप को **शुद्ध करें**।

- तथा जिस प्रकार यिर्मयाह ने कहा, सीखो अन्यजातियों की चाल को मत", ...(3) लोगों की प्रथाएं तो छलावा हैं; यिर्मयाह 10:1-3

लैव्यव्यवस्था 18:1-4 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,(2) इस्राएलियों से बात कर और उनसे कहः मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। (3) **तुम जिस देश में रहते थे अर्थात् मिस्र देश के से कार्य न करना** और न जिस देश में मैं तुम्हें लिए जाता हूँ अर्थात् कनान देश के कार्य करना। **उन देशों की विधियों पर न चलना**।(4) तुमको **मेरे ही नियमों को मानकर** और मेरी ही विधियों का पालन करके उ**नके अनुसार चलना होगा**। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ ।
लैव्यव्यवस्था 18:6-30 में परमेश्वर सभी प्रकार के **यौन सम्बन्धित घृणित कार्यों** का स्पष्ट विवरण देता है जिनकी सख्त मनाही है। आप इन भागों को पढ़ें। ये पद हैं :

लैव्यव्यवस्था 18:24-30 "ऐ**से ऐसे कामों के द्वारा अपने आप को अशुद्ध न करना**, क्योंकि इन्हीं सब कार्यों के कारण वे **सब जातियाँ** जिन्हें मैं तुम्हारे सामने से निकालने पर हूँ **अशुद्ध हो गई हैं**।(25) और

उनका देश भी अशुद्ध हो गया है, इस कारण **मैं उसके अधर्म का दण्ड उसी को देता हूँ**, जिस से वह देश अपने निवासियों को उगल देता है।(26) अतः **तुम मेरे नियमों और विधियों को मानना और तुम में से कोई भी चाहे वह देशी हो या तुम्हारे मध्य वास करने वाला परदेशी हो, ऐसा घिनौना काम न करे** ...(28) अतः ऐसा न हो कि तुम भी उसे अशुद्ध करो और जिस प्रकार उस **देश ने** उस जाति को जो तुमसे पहले वहां थी उगल दिया, उसी प्रकार वह **तुम्हें भी उगल दे**।

- शताब्दियों से जाति के बाद जातियाँ व्यभिचार के कारण गिर गई हैं।
- मैंने एक मनुष्य को यह कहते हुए सुना: "*जिसे एक पीढ़ी ने संतुलन में लिया हो, अगली पीढ़ी अधिकता में लेगी।*" बिल गोथार्ड
- मुझे ऐसा लगता है कि अमेरिका में आजकल यही हो रहा है।

(29) जितने लोग इन घृणित कार्यों में से किसी एक को करें वे सब अपने लोगों में से **नाश किए जाएं**।

- **इससे इन घृणित कार्यों की गंभीरता व्यक्त होती है। परमेश्वर से नहीं** "लोगों में से नाश"। वे परमेश्वर के लोगों में नहीं रह सकते **क्योंकि** वे अब धार्मिकता के गवाह नहीं लेकिन परमेश्वर की झूठी और गलत गवाही देते हैं। संसार इस तरह से रह रहे मसीहियों को "**पाखण्डी**" कहती है।

(30) इस प्रकार **तुम लोग मेरी आज्ञा का पालन करते रहना** और जो जो घृणित रीतियां तुमसे पहले प्रचलित थीं उनमें से **किसी पर न चलना** कि उनके द्वारा **अशुद्ध हो जाओ**। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"

लैव्यव्यवस्था 19 में इस्राएलियों को मिस्र से बाहर लाने के बाद परमेश्वर ऐसे बहुत से महत्वपूर्ण विषयों के बारे में बताते हैं जिनका हमें जानना आवश्यक है यदि हम परमेश्वर की **आशीषों और कृपा को पाना चाहते हैं।**

(1) तब यहोवा ने मूसा से कहा, (2) "इस्राएलियों की सारी मण्डली से बात कर और कहः **तुम पवित्र बने रहो, क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा पवित्र हूँ।**

- पवित्र बनने का अर्थ : ऐसा जीवन जीना जो संसार की रीति अथवा संस्कृति से अलग होकर परमेश्वर में हो। उसके राजदूत के समान।

(3) **तुम अपनी अपनी माता और अपने अपने पिता का भय मानना,**

(4) **तुम मूरतों की ओर न फिरना**

कुलुस्सियों 3:5 इसलिए अपनी पार्थिव देह के अंगों को मृतक समझो, अर्थात् व्यभिचार, अशुद्धता, वासना, **बुरी लालसा और लोभ को जो मूर्तिपूजा है।**

(11) **"तुम चोरी न करना, न धोखा देना,** और **न** एक दूसरे से **झूठ बोलना**।(12) तुम **मेरे नाम से झूठी शपथ खाकर** अपने परमेश्वर का नाम अपवित्र न ठहराना। मैं यहोवा हूँ।

- हम उसका और उसके नाम का प्रतिनिधित्व करते हैं। जब भी हम अपने वचन का पालन नहीं करते, हम उसका और अपना नाम खराब करते हैं। तथा उसके गवाह होने के अपनी बुलाहट और मिशन के प्रति असफल ठहरते हैं। और, यह शैतान को खुला द्वार देता है (इफि. 4:25 - 32)।

(13) "तू अपने पड़ोसी पर **अंधेर न करना** और **न उसे लूटना**। मज़दूर की मज़दूरी रात भर अर्थात् प्रातः काल तक तेरे पास न रहने पाए।

(14) **बहरे व्यक्ति** को तू **शाप न देना** और **न अन्धे** के आगे **ठोकर रखना**, वरन् अपने परमेश्वर का **भय मानना**। मैं यहोवा हूँ।

- "परमेश्वर का भय" मानने का अर्थ गहरा भक्तिपूर्ण भय और आदर होना है।

(15) "न्याय चुकाने में **अन्याय** न करना। न तो दरिद्र का पक्ष लेना और न बड़े मनुष्य का मुंह देखा विचार करना, परन्तु सच्चाई के साथ अपने पड़ोसी का न्याय चुकाना।

- हमारे देश में आज भी अन्याय होता है। यहाँ तक कि न केवल संविधान के अर्थ को मोड़ा जाता है बल्कि उल्टा भी कर दिया जाता है।
- यूहन्ना 7:24 मुँह देखा न्याय मत करो, परन्तु धार्मिकता से न्याय करो।"

(16) तू अपने लोगों में **लुतराई** करते न फिरना और **न अपने पड़ोसी की हत्या के लिए युक्तियां बनाना**। मैं यहोवा हूँ।

(17) **अपने मन में एक दूसरे के प्रति बैर न रखना**; अपने पड़ोसी को अवश्य डांटना नहीं, तो उ**सके पाप का भार तुझ को उठाना पड़ेगा।**

- 1 यूहन्ना 2:9-11 जो कोई यह कहता है कि मैं ज्योति में हूँ फिर भी **अपने भाई से घृणा करता है**, वह अब तक **अन्धकार** ही में है।(10) जो कोई अपने भाई से प्रेम करता है, वह ज्योति में बना रहता है, और उसमें कोई ठोकर का कारण नहीं।(11) परन्तु जो कोई अपने भाई से घृणा करता है, और वह अन्धकार में है और अन्धकार में चलता है, और नहीं जानता कि कहां जा रहा है, क्योकि अन्धकार ने उसकी आंखें अन्धी कर दी हैं।

- हम में से प्रत्येक का कर्तव्य है कि "प्रेम से प्रेरित हो कर सत्य बोलें" (इफि.4:15) और जो गलत और पाप करना चुनते हैं उनका विरोध कर सकें।

- गलातियों 6:1-2 हे भाइयो, यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा भी जाए तो तुम जो आत्मिक हो नम्रतापूर्वक उसे **सम्भालो**, परन्तु सतर्क रहो कि कहीं तुम भी परीक्षा में न पड़ जाओ।

वापस लैव्यव्यवस्था 19 में:

(18) **पलटा** न लेना, और न अपने जाति भाइयों से **बैर रखना**, परन्तु एक दूसरे से अपने समान **प्रेम** रखना; मैं यहोवा हूं।

- 1 पतरस 3:9-12 बुराई का बदला बुराई से **न दो,** न गाली के बदले गाली दो, पर **आशिष** ही दो, क्योंकि **तुम इसी अभिप्राय से बुलाए गए हो कि उत्तराधिकार में आशिष प्राप्त करो।**(10) क्योंकि "**जो जीवन की अभिलाषा** रखता है, और **अच्छे दिन** देखना चाहता है, वह अपनी जीभ को दुष्टता की बातों से, और अपने होठों को छल की बातें बोलने से रोके रहे। (11) वह दुष्टता से **फिर कर भलाई करे,** और **शान्ति** को ढूंढ़कर उसका पीछा करे।(12) क्योंकि **प्रभु की आंखें धर्मियों पर** लगी रहती हैं और **उसके कान उनकी प्रार्थनाओं** की ओर **लगे रहते** हैं। परन्तु प्रभु दुष्कर्मियों के विमुख रहता है।"(भजन 34:12-16)

(28) तुम मृतकों के कारण अपने शरीर को न काटना और **न अपने ऊपर कुछ गुदवाना**। मैं यहोवा हूँ।

- शरीर को काटने और गुदवाने अन्यजाति रीति रिवाजों से है। और यह भारत समेत अनेक देशों में प्रचलित है।

  1 कूरि. 6:19-20 क्या तुम नहीं जानते कि **तुम में से प्रत्येक की देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है,** जो तुम में है और जिसे तुमने परमेश्वर से पाया है, और कि **तुम अपने नहीं हो? (**20) क्योंकि **तुम मूल्य देकर खरीदे गए हो**: इसलिए **अपने शरीर के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो**।

लैव्यव्यवस्था 19:31 "ओझाओं और भूतसिद्धि करने वालों के पास न जाना और न उनकी खोज करना कि उनके द्वारा अशुद्ध हो जाओ। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।

लैव्यव्यवस्था 19:32 "सफेद बाल वालों के सामने उठ खड़े होना और वृद्ध का आदर करना, और अपने परमेश्वर का भय मानना। मैं यहोवा हूँ।

लैव्यव्यवस्था 20:23 **तुम उन जातियों की प्रथाओं पर मत चलना जिनको मैं तुम्हारे सामने से निकालूँगा, क्योंकि उन्होंने ये सब काम किए हैं और इस कारण मुझे उनसे घृणा है।**

20:24-25 मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ, जिसने **तुमको अन्यजातियों से अलग किया है।** (25) इसलिए तुम शुद्ध और अशुद्ध पशुओं में, तथा शुद्ध और अशुद्ध पक्षियों में **भेद करना,** और तुम किसी पक्षी या पशु या भूमि पर रेंगनेवाले जन्तु से, जिनको मैंने तुम्हारे लिए अशुद्ध न ठहराकर अलग किया है, अपने आपको घृणित न ठहराना।(26) इस प्रकार तुम मेरे लिए **पवित्र बने रहो,** क्योंकि मैं यहोवा पवित्र हूँ, और **मैंने तुमको अन्यजातियों में से अलग किया है कि तुम मेरे बने रहो।**

हल्लेलुय्याह ! धन्यवाद प्रभु यीशु

सच्चे विश्वासी के लिए - हम में से कोई भी - इन में से कोई भी या अन्य कोई पाप करना, **अनन्त जीवन की बात नहीं है।** जो कोई भी यीशु मसीह पर विश्वास करता और ग्रहण करता है, उसे अनन्त जीवन का मुफ़्त दान मिलता है।

यह शैतान को खुला द्वार देने का विषय नहीं बल्कि "**परमेश्वर को प्रसन्न**" करने का विषय है।

- रोमियों 4:6-8 जिस प्रकार दाऊद भी उस मनुष्य को **धन्य** कहता है जिसे परमेश्वर **कर्मों के बिना धर्मी गिनता है**: (7) "**धन्य** हैं वे जिनके अपराध **क्षमा हुए**, और **जिन के पाप ढांपे गए।** (8) **धन्य** है वह मनुष्य जिसके **पाप का लेखा प्रभु नहीं लेगा**।

कोई भी पाप या पापों को जो हमसे हुए हैं, हमें (1) उसे करना **रोककर उससे मन को फिराना** चाहिए तथा (2) अपने स्वर्गीय पिता और प्रभु यीशु के सामने पाप या **पापों को मान लें**

- 1 यूहन्ना 1:9-10 यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है। (10) यदि हम कहें कि हमने पाप नहीं किया तो उसे झूठा ठहराते हैं, और उसका वचन हम में नहीं।

.....

बहुत से बाइबल के ऐसे भाग हैं जो यह बताते हैं कि **जो व्यक्ति परमेश्वर के समक्ष उसको भावती हुई चाल चलता है**, उसे **बहुत सी आशीषें** प्राप्त होती हैं।

इब्रानियों 13:20-21 अब शान्तिदाता परमेश्वर ... हमारे प्रभु यीशु, (21) **तुम्हें सब भले गुणों से परिपूर्ण करे, जिस से तुम उसकी इच्छा पूरी करो, और जो कुछ उसकी दृष्टि में प्रिय है**, वह यीशु मसीह के द्वारा हमारे अन्दर पूरा करे। उसी की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

1 यूहन्ना 3:22 और जो कुछ **हम मांगते हैं**, उस से पाते हैं, क्योंकि **हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते और वे ही कार्य करते हैं जो उसकी दृष्टि में प्रिय हैं।**

यहोशू 1:7-9 इतना हो कि **तू हियाव बाँधकर** और **बहुत दृढ़ होकर** जो व्यवस्था मेरे दास मूसा ने तुझे दी है उन सब के अनुसार करने में **चौकसी करना**; और उस से न तो दाहिने मुड़ना और न बाएँ, तब जहाँ जहाँ तू जाएगा **वहाँ वहाँ तेरा काम सफल होगा।** (8) व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात **ध्यान दिए रहना,** इसलिये कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे; क्योंकि **ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।**

अब्राहम की आशीषें: व्यवस्थाविवरण 28 . . . (2) और यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा माने, तो **ये सब आशिषें** तुझ पर आ बरसेंगी।

- अब्राहम की **सारी आशीषें** उन सब की भी हैं, जो इब्राहीम के समान विश्वास वाले हैं, जो हम सब का पिता है, (रोमियों 4:16-17)
- जब हम इस संसार के मार्गों को (एक संस्कृति जिसका ढांचा "उस दुष्ट" ने तैयार किया है कि लोगों को "मारे, चुराए और नाश करे") **प्राथमिकता** देते है और **उसके अनुसार जीना चुनते** हैं, तो व्यवस्थाविवरण 27:15-26 के **शाप** अपने ऊपर लाते हैं।

जिस प्रकार जवान ने किया, उसी प्रकार हमें भी करना चाहिए :

इब्रानियों 11:25-28 . . . उसने पाप के क्षणिक सुख भोगने की अपेक्षा, परमेश्वर की प्रजा के साथ दुख भोगना ही अच्छा समझा। (26) उसने **मसीह के कारण निन्दित होने** को (आलोचना या त्यागा जाना) **मिस्र के धन के भण्डारों की अपेक्षा बढ़कर समझा,** क्योंकि वह प्रतिफल पाने की आस लगाए था। (27) विश्वास ही से उसने राजा के क्रोध (शैतान का रूप) की चिन्ता न करते हुए **मिस्र देश को छोड़ दिया** (उस संस्कृति और उसके मार्गों को), क्योंकि वह अनदेखे को मानो देखते हुए दृढ़ बना रहा।

जिस प्रकार यहोशू ने निर्णय लिया हमें भी लेना चाहिए :

यदि यहोवा की सेवा करनी तुम्हें बुरी लगे तो **आज ही चुन लो कि तुम किसकी सेवा करोगे:** उन देवताओं की जिनकी सेवा तुम्हारे पूर्वज फरात नदी के उस पार करते थे, या एमोरियों के देवताओं की जिनके देश में तुम रहते हो। **परन्तु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा की सेवा करूँगा।** यहोशू 24:15

जिस प्रकार अब्राहम ने किया हमें भी करना चाहिए :

इब्रानियों 11:9-11 विश्वास ही से **वह प्रतिज्ञा के देश में परदेशी होकर रहा,** .....(10) **वह उस स्थिर नींव वाले नगर की प्रतीक्षा में था जिसका रचने और बनाने वाला परमेश्वर है।**

हमारे आदर्श के समान कि विदेशी संस्कृति में कैसे रहना है :

इब्रानियों 11:13-16 ये सब विश्वास की दशा में मरे। इन्होंने **प्रतिज्ञा** की गई बातों को प्राप्त नहीं किया, परन्तु उन्हें दूर ही से देख कर उनका अभिवादन किया और **मान लिया कि हम पृथ्वी पर परदेशी और पराए हैं।**

(14) **जो ऐसा कहते हैं** वे यह स्पष्ट कर देते हैं कि **वे तो अपने निज देश की खोज में हैं।** (15) यदि वे उस देश के विषय सोचते जिस से वे निकले थे तो उन्हें लौट जाने का अवसर होता। (जिस प्रकार आज कल विश्वासी करते हैं) (16) पर **वे एक उत्तम अर्थात् स्वर्गिक देश के अभिलाषी हैं। इसलिए परमेश्वर उनका परमेश्वर कहलाने से नहीं लजाता, क्योंकि उसने उनके लिए एक नगर तैयार किया है।**

फिलिप्पियों 3:17-20 भाइयो, तुम सब मिलकर मेरा अनुकरण करो, और उन्हें ध्यान से देखो जो इस रीति से चलते हैं जिसका नमूना तुम हम में देखते हो; (18) क्योंकि मैं तुम से पहिले अनेक बार कह चुका हूं और अब भी रो-रोकर कहता हूं कि ऐसे बहुत हैं जो अपने आचरण से मसीह के क्रूस के शत्रु हैं। (19) उनका अन्त विनाश है, उनका परमेश्वर पेट है, वे अपने निर्लज्जता की बातों पर गर्व करते हैं और सांसारिक वस्तुओं पर मन लगाए रहते हैं। (20) परन्तु **हमारी नागरिकता स्वर्ग की है**, जहां से **हम उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के आगमन की प्रतीक्षा उत्सुकता से कर रहे हैं।**

इसलिए **हमारी अभिलषा** यह है, चाहे साथ रहें या अलग रहें

हम उसे भाते रहें। (2 कुरिन्थियों 5:9)

याकूब 1:22 परन्तु अपने आप को **वचन पर चलने वाले** प्रमाणित करो, न कि केवल सुनने वाले जो स्वयं को धोखा देते हैं . . . (25) पर जो व्यक्ति स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है, **वह अपने काम में ... आशीष पाएगा** .. ।

3 यूहन्ना 2 हे प्रिय, **मेरी प्रार्थना** है कि जैसे तेरी आत्मा उन्नति कर रही है, वैसे ही **तू सब बातों में उन्नति करे** और **स्वस्थ** रहे।